पशुओं में आन्तरिक परजीवी नियंत्रण

कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र
संयुक्त निदेशालय प्रसार शिक्षा
भाकृअप-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान
इज्जतनगर - 243122 (उ. प्र.)

- ❖ घर पर बाँध कर खिलाये जाने वाले पशुओं में आन्तरिक परजीवी (आँत के कृमि, फ्लूक्स व फीता कृमि) संक्रमण कम होता है।
- ❖ अन्तः परजीवियों के संक्रमण की तीव्रता मुख्य रूप से पशुओं के रख–रखाव से जुड़ी होती है।
- ❖ बाँध कर खिलाये जाने वाले पशुओं में अन्तः परजीवीयों के संक्रमण से दीर्घकालिक बीमारी होती है जबकि चरने वाले पशुओं में अल्पकालिक परन्तु तीव्र प्रभाव वाली बीमारी होती है।
- ❖ दीर्घकालिक परजीवी ladze.k@chekjh की वजह से पशुओं का उत्पादन (दूध,माँस,ऊन, शरीर भार में कमी आदि) व प्रजनन क्षमता प्रभावित होती है, जबकि उग्र बीमारी होने पर रक्ताल्पता,गले के नीचे सूजन, दस्त तथा त्वचा के रूखापन जैसे लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं।
- ❖ कम उम्र के पशु, बीमार पशु, तनावग्रस्त पशु तथा बूढ़े पशुओं में परजीवी संक्रमण का खतरा ज्यादा होता है।
- ❖ क्षेत्र विशेश के लिये अन्तः परजीवीयों हेतु नियंत्रण योजना बनाते समय पशुओं की आयु प्रजाति तथा पशुपालपन के तौर–तरीके का भी ध्यान रखना आवश्यक होता है।
- ❖ पशुओं के स्वास्थ्य की उचित जाँच व उपचार हेतु त्वरित व्यवस्थायें होनी चाहिए।

अन्तः परजीवियों के सर्वाधिक संक्रमण का समय :

- ❖ अन्तः परजीवीयों के जीवनचक्र की कुछ अवस्थायें/वातावरण में बरसात के मौसम में सर्वाधिक पाई जाती है अतः इस मौसम में पशुओं में भी संक्रमण सर्वाधिक होता है। जाड़े में भी अंतः परजीवीयों का संक्रमण अधिक होता है।

- ग्रीष्म ऋतु में तेज धूप के कारण वातावरण में परजीवीयों की संख्या कम हो जाती है, जिससें पशु में भी संक्रमण कम देखा जाता है।
- पशुओं को बाहर चुगाने अथवा बरसात में पानी जमा होने वाले स्थानों से घास काटकर खिलाने से भी अंतः परजीवी संक्रमण हो जाता है।

निदान :

- अंतः परजीवियों के द्वारा होने वाली बीमारियों के लक्षण अन्य बीमारियों जैसे ही होते है अतः लक्षणों के आधार पर निदान मुश्किल होता है फिर भी चराये जाने का इतिहास व लक्षणों के मिलान द्वारा सम्भावित निदान किया जा सकता है।
- मल परीक्षण के द्वारा पशुओं के अंतः परजीवीयों के संक्रमण का निदान किया जा सकता है।
- पशुओं में परजीवी संक्रमण की तीव्रता की जाँच, उनके प्रतिग्राम मल में मौजूद परजीवी के अण्डों को सूक्ष्मदर्शी से गिनकर किया जा सकता है।

क्रम सं0	पशु प्रजाति	प्रभावित अंग	पाये जाने वाले परजीवी	संक्रमण का तरीका	प्रमुख लक्षण
1.	गाय व भैंस	पेट (एबोमेजम)	हीमान्कस प्लेसाई मेसिस्टोसिरस डिजीटेटस ट्राइकोस्ट्रागाइलस स्पी0 (गोल कृमि)	लारवा से दूषित घास चरने/खाने से	• भूख न लगना, दस्त, पानी की कमी, रक्ताल्पता, शरीर भार में कमी, जबड़े के नीचे सूजन, शरीर का चमकहीन होना।
		छोटी आँत	टाक्सोकेरा विटुलोरम व्यूनोस्टोमम स्पी0 स्ट्रांगिल्वाइडिस मोनिजिया बेनेडेनी आईमेरिया स्पी0	माँ के दूध से लारवा से संक्रमित घास चरने/खाने से, दूषित घास खाने व संक्रमित पानी पीने से	• काली मिट्टी के जैसी दस्त रक्ताल्पता, दस्त • पानी की कमी तथा वजन का ह्रास खूनी दस्त, • रक्ताल्पता, पानी की कमी तथा मल त्याग में परेशानी
		बड़ी आँत	इसोफेगोस्टोमम स्पी0 ट्राइचुरिस स्पी0 (गोल कृमि)	लारवा से संक्रमित घास खाने से	दस्त व अपच
		पेट (रूमेन व रेटीकुलम)	एम्फीस्टोम्ए (रूमेन फ्लूक)	परजीवी की लारवा से संक्रमित घास चरने/खाने से	• पिचकारी के समान तेज दस्त, पानी की कमी व जबड़े के नीचे सूजन

		लीवर तथा बाइल डक्ट	फैसिओला जाइगेन्टिका (लीवर फ्लूक)	परजीवी की लारवा से संकमित घास चरने/खाने से	• भूख में कमी, रक्ताल्पता,पेट का फूलना, चलने में परेशानी तथा जबड़े के नीचे सूजन
2.	छोटे पशु	पेट (एबोमेजम)	हीमान्कस कन्टारटस ट्राइकोस्ट्रांगाइलस एक्सी आस्टरटेजिया स्पी0	लारवा से दूषित घास चरने/खाने से	• भूख न लगना, दस्त, पानी की कमी, रक्ताल्पता, शरीर भार में कमी, जबड़े के नीचे सूजन, शरीर का चमकहीन होना।
		छोटी आँत	व्यूनोस्टोमम् स्पी0 ट्राइकोस्ट्रांगाईलस स्पी0 आस्टरटेजिया स्पी0 स्ट्रागिलाइडिसस्पी0 मोनिजियाएक्सपेन्सा आईमेरियास्पी0	लारवा से दूषित घास चरने/खाने से	• रक्ताल्पता, दस्त, पानी की कमी, शरीर भार में कमी
		बड़ी आँत	इसोफेगोस्टोममस्पी0 ट्राइचुरिस स्पी0	लारवा से दूषित घास चरने/खाने से	• अपच तथा दस्त
		पेट (रूमेन व एटीकुलम)	एम्फीस्टोम्स (रूमेन फ्लूक)	मेटासरकेरिया से दूषित घास खाने से	• पिचकारी जैसी तेज दस्त, जबड़े के नीचे सूजन, शरीर में पानी की कमी
		लीवर तथा बाइल डक्ट	फैसिओला जाइगेन्टिका(लीवर फ्लूक)	मेटासरकेरिया से दूषित घास खाने से	• भूख न लगना, रक्ताल्पता, पेट फूलना, चलने–फिरने में परेशानी, जबड़े के नीचे सूजन आदि।

उपचार व रोकथाम :

- ❖ परजीवी रोकथाम में कृमिनाशी दवाओं का अपना एक विशेश स्थान है परन्तु किसी एक विधि से नियंत्रण सम्भव नहीं है।
- ❖ एक आदर्श कृमिनाशी दवा को सुरक्षित होना चाहिए तथा उसकी मारक क्षमता परजीवी के जीवनचक्र की सभी अवस्थाओं के लिए होनी चाहिए।
- ❖ दवाओं के प्रयोग से पहले उस क्षेत्र के परजीवी महामारी रोग विज्ञान का अध्ययन जरूरी है।
- ❖ पशुओं के चुगान तथा रखरखाव हेतु वैज्ञानिक पद्धति अपनाया जाना चाहिए।
- ❖ पशुओं में अन्तः परजीवी संक्रमण के उपचार हेतु कृमिनाशी दवाओं के उपयोग हेतु अस्थाई समय–सारिणी नीचे दी जा रही है।

सारिणी–2: पशुओं में कृमिनाशी दवाओं के उपयोग हेतु समय सारिणी

कम सं0	पशु आयु वर्ग	परजीवी संक्रमण	कृमिनाशी दवा के प्रयोग का उचित समय	विशेश विवरण
1	6 माह तक के बछड़ें	1–टाक्सोकेरा विटुलोरम 2.–स्ट्रोमिल्वाइडिस पैपीलोसस	प्रथम उपचार 14–21 दिन की उम्र तथा द्वितीय उपचार 35–42 दिन की उम्र पर	• बेन्जिमिडाजोल व लीवामीसोल समूह की दवाये बारी–बारी से प्रयोग कर सकते हैं।
2	6 माह से 2 साल तक की ओसर (बछिया)	1–गोल कृमि 2–फीता कृमि 3–लीवर फ्लूक व रूमेन फ्लूक	6 माह के अन्तराल पर विशेषकर बरसात से पहले (मई–जून) व बरसात समाप्ति के बाद (नवम्बर–दिसम्बर)	• बृहद मारक क्षमता वाली कृमिनाशी दवाओं का उपयोग करें। • तराई तथा पानी जमा रहने वाले निचले इलाके के पशुओं में
3	वयस्क पशु (2 साल के ऊपर)	1–लीवर फ्लूक व रूमेन फ्लूक 2–गोल कृमि	• पशुगृह में बाँधकर खिलाये जाने वाले पशु को वर्ष में एक बार वर्षा ऋतु से पहले (मई–जून में) •चरने वाले पशुओं को 6 माह के अन्तराल पर (मई–जून व नवम्बर–दिसम्बर में)	• बृहद मारक क्षमता वाली कृमिनाशी दवाओं का उपयोग करें। • तराई तथा पानी जमा रहने वाले निचले इलाके के पशुओं में
4	किसी भी आयु वर्ग के गर्भित दुधारू तथा बीमार पशु	1–किसी भी परजीवी के पुख्ता प्रमाण के बाद	• मल परीक्षण की रिर्पोट के विश्लेषण के बाद विशेष दवा का चयन व प्रयोग किसी भी समय	• कुछ दवायें दुधारू पशुओं में नहीं दी सकती है। • कुछ दवाओं के प्रयोग से भ्रूण गिर जानें व विचित्र अंग निर्माण की शिकायत आती है अतः सावधानी से ही दवा का चयन होना चाहिए।
5	छोटे पशु	1–गोल कृमि 2–फीता कृमि 3–लीवर फ्लूक व रूमेन फ्लूक	4 माह के अन्तराल पर विशेषकर बरसात से पहले (मई–जून) व बरसात समाप्ति के बाद (नवम्बर–दिसम्बर)	• बृहद मारक क्षमता वाली कृमिनाशी दवाओं का उपयोग करें। • बेन्जिमिडाजोल व लीवामीसोल समूह की दवाये बारी–बारी से प्रयोग कर सकते हैं।

संरक्षण : **डा0 राज कुमार सिंह**
निदेशक, भ0कृ0अ0प0–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसांधन संस्थान, इज्जतनगर– 243122(उ0प्र0)

मार्गदर्शन: **डा0 महेश चन्द्र**
संयुक्त निदेशक, प्रसार शिक्षा, भाकृअप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर– 243122 (उ0 प्र0)

लेखक : **डा0 उज्जवल कुमार डे**
वैज्ञानिक, रेफरल वेटनेरी पॉलीक्लीनिक

डा0 रूपसी तिवारी
प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी एटिक

संपादन : **डा0 रूपसी तिवारी**
प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी एटिक, भाकृअप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसधांन संस्थान, इज्जतनगर– 243122 (उ0 प्र0)

अधिक जानकारी हेतु संपर्क :
आई0वी0आर0आई0 हेल्पलाइन, 0581–2311111
किसान कॉलसेन्टरः 1800–180–1551
आई0 वी0 आर0 आई0 बेवसाइट : www.ivri.nic.in